प्रज्ञा के मंच से .....

विश्वविद्यालय महारानी महाविद्यालय का अकादमिक मंच 'प्रज्ञा' वर्ष 2013 से पुनः सक्रिय हुआ और इसके तहत् वर्ष 2013, सितम्बर माह में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। महिला सुरक्षा के संवेदनशील और चिंतनीय मुद्दे को लेकर ''महिला सुरक्षा के विविध प्रश्नः कोख से कब्र तक'' विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई। राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती ममता शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न संगोष्ठी में एक्टिविस्ट श्रीमती अरूणा राय ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। महारानी महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या प्रो. विद्या जैन की अगुआई में सफलतापूर्वक सम्पन्न संगोष्ठी में बौद्धिक–सामाजिक क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्तियों का वैचारिक योगदान प्राप्त हुआ। इनमें प्रमुख रहें : प्रो. पवन सुराणा, प्रो. लाडकुमारी जैन, पूर्व अध्यक्ष, राज्य महिला आयोग, प्रो. आनंद कुमार, जे.एन.यू. , सुश्री कविता श्रीवास्तव, श्रीमती अदिति मेहता आदि।

विविध सत्रों के अन्तर्गत होने वाली चर्चा के अन्तर्गत यह सामने आया कि महिला असुरक्षा की स्थितियों के लिए जहाँ हमारा सामंती–पितृसतात्मक समाज और उसके तौर तरीके जिम्मेदार हैं तो वहीं आज की कानून व्यवस्था, पुलिस प्रशासन और न्यायिक प्रक्रिया की धीमी सुस्त चाल भी प्रश्न के घेरे में है। शिक्षा और कानूनी अधिकारों ने महिलाओं के लिए आगे बढ़ने और प्रगति करने की बहुत सारी संभावनाओं को प्रस्तुत किया है लेकिन परम्परागत समाज की बंद मानसिकता से लेकर खाप–प्रचायतों के अराजकतावादी सोच तक ने इस संदर्भ में टकराहट की स्थिति पैदा की है। महिला सुरक्षा को लेकर जब तक असरदार कानून व्यवस्था, सख्त पुलिस रवैया और संवेदनशील पुरूष समाज सहयोग नहीं करेगा स्थितियों को बदलना कठिन चुनौती होगी। निर्भया कांड ने इस विषय को पुनः ज्वलंत तो बना दिया है लेकिन उसके बाद भी बलात्कारों की बेरोक स्थिति ने इसे समाधान से दूर ही रोक दिया है। इस भयावह स्थिति की तुरंत रोकथाम के लिए पुलिस, प्रशासन, आयोग, महिला संगठनों के एकीकृत–सुदृढ़ स्वरूप और जागरूक नागरिक मंच की माँग आज भी बनी हुई है।

वर्ष 2014, नवम्बर में 'प्रज्ञा' के अन्तर्गत सुविख्यात लेखिका चित्रा मुद्गल को आमंत्रित किया गया। 'पज्ञा' महारानी महाविद्यालय, इंडो–जर्मन सोसाइटी, जयपुर तथा 'स्पंदन' लेखिका संस्थान, जयपुर ने संयुक्ततः ''स्त्री स्वातंत्र्य के बदलते मायने'' विषय पर एक दिवसीय सिम्पोजियस आयोजित किया। प्रो. दमयंती गुप्ता, प्रो. सुदेश बत्रा, प्रो. पवन सुराणा तथा

'स्पंदन' की अध्यक्षा नीलिमा टिककू ने क्रमशः विषय प्रवर्तन करते हुए इस संदर्भ में विषय की स्थापना व पल्लवन किया। इस मौके पर बोलते हुए अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में चित्रा जी ने कहा कि 'स्त्री के संदर्भ में यह एक जटिल प्रश्न है कि क्या स्त्री को स्वं के तंत्र में रहने की सुविधा कभी मिली? पहले पितृसत्ता और अब बाजार का पैमाना स्त्री की स्वतंत्रता को व्याख्यायित कर रहा है। इससे बचने के लिए स्त्री का स्वचेतना संपन्न होना और स्वतंत्रता को स्वांनुसार स्थापित–संधीत करना होगा। स्त्री जेंडर का एक मजबूत हिस्सा बने इसके लिए धड़ के ऊपर एक उदद मस्तिष्क की उपस्थिति का सचेत इस्तेमाल करना होगा। क्या चुनना है, कितना चुनना है, किसके लिए चुनना है – ये तमाम प्रश्न जब उपजेंगे तो प्रहरी के रूप में स्वतंत्रता को 'स्व' के तंत्र यानि व्यवस्था में ढालेंगे।'

कार्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा था वे प्रश्न जिन्हें छात्राओं ने अपनी सहज जिज्ञासा, समस्याओं या शंकाओं के रूप में रखा। 'कन्या जन्म को पुरस्कृत करने के सरकारों के अभियान को छात्राओं ने अपमान जनक माना दी जाने वाली पुरस्कार राशि को बैसाखी के समान माना गया जो अधिक दूर तक चलने में सहायक नहीं होगी। सुरक्षा व सम्मान का प्रश्न छात्राओं की प्रश्नाकुलता के केन्द्र में रहे।

डॉ. उर्वशी शर्मा
संयोजक : प्रज्ञा

महारानी महाविद्यालय के जुलाई 1914 II के सत्र के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रत्येक वर्ष की भांति कॉलेज के प्रथम दिवस पर नवागन्तुक छात्राओं का परम्परागत रूप से तिलक लगाकर स्वागत किया गया। महाविद्यालय का नया सत्र उत्साह पूर्ण चेतना के साथ शुरू हुआ।

इसी सप्ताह माननीय कुलपति महोदय की पहल पर महारानी कॉलेज में पहली बार संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया जहाँ माननीय कुलपति महोदय छात्राओं से रूबरू हुए। इसी कार्यक्रम में महाविद्यालय का 71वां स्थापना दिवस समारोह रंगारंग कार्यक्रम के साथ मनाया गया। इस मौके पर छात्राओं ने लघुनाटिका के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या का मुद्दा और कन्याओं से संबन्धित सरकार के अभियान 'बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं' का संदेश दिया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सवाईमाधोपुर विधायक, राजकुमार दीया कुमारी ने कहा –'पुरूषों के मुकाबले महिलाओं का घटता अनुपात गंभीर' मुद्दा है। इस अवसर पर राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. देवस्वरूप व महाविद्यालय प्राचार्या प्रो. कानन बाला शर्मा द्वारा अपने उद्बोधन के माध्यम से छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

इस वर्ष महाविद्यालय में अनेक कार्यशाला सेमीनार, भाषण, सिम्पोप्रियम व अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें मुख्य रूप से इन्फोसिस सेमीनार, फिजिक्स सेमीनार CONIPAS व ''मेक इन इण्डिया'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

Legal Awareness आत्म रक्षा कार्यशाला यूजीसी–सीपीई कार्यक्रम, एचआईवी एड्स पर स्लोगन व पोस्टर प्रतियोगिता, भ्रष्ट्राचार उन्मूलन में तकनीकी साधनों का योगदान जेण्डर आधारित हिंसा विरोधी अभियान नारी गरिमा के लिए आवश्यक है। विषयक वाद विवाद प्रतियोगिता, ई.टी.वी. द्वारा अन्तर्गराष्ट्रीय महिला दिवस पर महाविद्यालय प्रांगण में कार्यक्रम रेडरिबन प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया गया।